सम्पादक के नाम

कभी शबनम , कभी शोला

2019 के लोकसभा चुनावों तक जिन्ना का जिन्न नाना विध जगह जगह प्रकट होता रहेगा ,कभी किसी यूनिवर्सिटी में , तो कभी चुनाव रैलियों में । जबकि अमुक कुत्सित जानवर का डब्बा बन्द मांस खाने के बावजूद वह जीते जी किसी जिन्न अथवा प्रेत जैसा दीखता था । हमारे देश मे मैने जितने भी लोग अमुक जानवर का मांस खाने वाले देखे , उन्हें भी उसी जानवर की तरह थुल थुल और मांसल पाया । दूसरी ओर कोट अथवा शेरवानी पहनने पर भी जिन्ना ऐसा प्रतीत होता था , जैसे हमारे खेतों में लट्ठ पर पुराने कपड़े टांग कर खड़ा किया बिजूका अथवा काक भगोड़ा दीखता है । मुझे आश्चर्य है , कि उससे एक तिहाई उम्र की , उसके दोस्त की बेटी ने उसमे क्या देखा , जो स्वयं अतिशय सुंदर होने के बावजूद उसके प्यार में फंस गई ।

अस्तु , देश विभाजन के प्रकरण में जिन्ना अथवा सावरकर सिर्फ मोहरा थे । वस्तुत: अंग्रेज़ को मज़बूरी में भारत छोड़ना पड़ रहा था । द्वित्तीय विश्व युद्ध मे परमाणु बम के सहारे मिली अनैतिक जीत के बावजूद वह अपने भविष्य की लेकर डर गया था । अत: उसने फैसला किया कि वह भारत छोड़ेगा , लेकिन इसका हुलिया बिगाड़ कर । इस काम के लिए उसे कुछ राष्ट्र घाती , अफवाह बाज़ और झूठे मनुष्य चाहिए थे , जो उसे जिन्ना और सावरकर के रूप में मिल गए ।

अंग्रेज़ की मानसिकता को मैं एक रोचक उदाहरण से समझाना चाहता हूं । 1991 के आसपास कभी , जब अविभाजित उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार के गिरने का खतरा पैदा हो गया , तो उन्होंने विधायकों को थामने हेतु अनेक जतन किये। मेरे जिले के एक विधायक को लाल बत्ती की गाड़ी दे दी । लेकिन सरकार फिर भी गिर गयी , और चुनाव घोषित हो गए । लाल बत्ती धारी विधायक ने देखा , कि मुलायम के साथ रहते चुनाव जीतना दुर्लभ है । अत: उसने मुलायम की पार्टी तो छोड़ दी , पर लाल बत्ती की कार न छोड़ी । जीवन मे पहली बार तो मिली थी ।

उधर लखनऊ से टिहरी के DM को संदेश आया , कि चूंकि उक्त माननीय को निगम की अध्यक्षी से हटा दिया गया है , अत: उनसे कार वापस ले ली जाए । यह संदेश विधायक को पँहुचा , तो उसने कार लौटाने से साफ मना कर दिया । उधर DM ने अपने कार्मिकों को आदेश दिया , कि जब भी विधायक की गाड़ी तेल भराने टिहरी आये , कार की चाबी छीन ली जाए । विधायक तक यह खबर पँहुची तो उसने टिहरी जाना ही बन्द कर दिया और बस से आने जाने वालों से डिब्बे में पेट्रोल मंगवा कर बिन्दास अपने गांव के आस पास घूमने लगा ।

दबाव बढ़ने पर तहसीलदार विधायक के पास गया , और बोला , देख बे माननीय , अब गाड़ी तो छीननी ही है । पुलिस की कुमुक आकर छीन झपट करे , इससे बेहतर यही है , कि आज भर अपने सभी रिश्तेदारों के घर जाकर गाड़ी की ठसक दिखा दे , और कल वापस कर दे ।

विधायक भी स्थिति की गम्भीरता को समझ गया । उसने आखिरी दिन लाल बत्ती की कार से जी भर ईंट , गारा , सीमेंट , सरिया और पत्थर ढुलवाया । कार से गाना सुनने की मशीन , नए सीट कवर , पर्दे , तौलिया और टायर निकाल लिए । इस तरह गाड़ी को गुड़ से गोबर बना कर पुराने टायर लगा कर गाड़ी लौटा दी ।

बस यूं समझो कि इसी तरह अंग्रेज़ ने मज़बूरी में झुंझला कर लुटा पिटा और बंटा हिंदुस्तान - पाकिस्तान हमें सौंपा । अत: फालतू में जिन्ना का स्यापा बन्द करो ।

-राजीव नयन बहुगुणा

आसाराम के पक्ष में देश के 14 बड़े वकीलों का पैनल खड़ा था और .....

उस बच्ची के पक्ष में सिर्फ़ एक सरकारी वक़ील और एक सरकारी जाँच अधिकारी लेकिन एक सरकारी वक़ील ने सरकारी जाँच अधिकारी की जाँच रिपोर्ट के आधार पर बनी चार्जशीट के आधार पर देश के बड़े बड़े नामी 14 वकीलों के पैनल को हरा दिया।

क्या इन सरकारी वक़ील और जाँच अधिकारी को प्रलोभन या धमकी नहीं मिली होगी ? ज़रूर मिली होगी..लेकिन ये सरकारी लोग न डरे न बिके..

तो कहने का मतलब ये कि हर सरकारी आदमी या सरकारी संस्था भ्रष्ट या निकम्मी नहीं होती...देश के सबसे अच्छे अस्पताल का नाम मेदांता नहीं एम्स है जो सरकारी हैं , सबसे अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज का नाम IIT है जो सरकारी हैं सबसे अच्छे मैनेजमेंट कॉलेज का नाम IIM है जो सरकारी है ,देश के सबसे अच्छे विद्यालय केन्द्रीय विद्यालय हैं जो सरकारी हैं ,देश के एक करोड़ लोग अभी या किसी भी वक्त अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए सरकारी रेल में बैठते हैं..., नासा को टक्कर देने वाला ISRO अम्बानी नहीं सरकार के लोग चलाते हैं..

सरकारी संस्थाएँ फ़ालतू में बदनाम हैं, अगर इन सारी चीज़ों को प्राइवेट हाथों में सौंप दिया जाए तो ये सिर्फ़ लूट खसोट का अड्डा बन जाएँगी.. ।।

- रवींद्र पटवल

गंगा की सफाई के लिए और कितने संतों की जान लेगी भाजपा सरकार

ब्रह्मचारी आत्मबोधानंद 190 से ज्यादा दिनों से अनशन पर हैं और 5 मई, 2019 से जल त्यागने का निर्णय भी ले चुके हैं। 112 दिन तक आमरण अनशन पर रहे स्वामी सानंद की पिछले साल मौत हो गई, बाबा नागनाथ की 2014 में 114 दिनों के अनशन के बाद जान चली गई, 1998 में स्वामी निगमानंद के साथ गंगा में अवैध खनन के खिलाफ हुए पहले अनशन पर बैठे स्वामी गोकुलानंद की 2003 में नैनीताल में खनन माफिया ने हत्या करवा दी...

संदीप पांडे, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता

हमारे देश में बलिदान की गौरवशाली परम्परा रही है। अनगिनत क्रांतिकारियों ने आजादी के आंदोलन में अपनी जान की बाजी लगाई। उनके बाद हम दूसरा एक सामूहिक प्रयास देख रहे हैं मातृ सदन, हरिद्वार के साधुओं का जो गंगा के संरक्षण के लिए अपनी जान दांव पर लगाए हुए हैं। अब तक इस आश्रम की ओर से 60 अनशन आयोजित किए जा चुके हैं, जिनमें स्वामी निगमानंद व स्वामी ज्ञान स्वरूप सानंद, जो पहले भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर में प्रोफेसर गुरुदास अग्रवाल के रूप में जाने जाते थे, की जान क्रमश: 115 व 112 दिनों के अनशन के बाद 2011 व 2018 में चली गई।

अब ब्रह्मचारी आत्मबोधानंद वर्तमान में 190 से ज्यादा दिनों से अनशन पर हैं और 5 मई, 2019 से जल त्यागने का निर्णय भी ले चुके हैं। बाबा नागनाथ की 2014 में 114 दिनों के अनशन के बाद जान चली गई व 1998 में स्वामी निगमानंद के साथ गंगा में अवैध खनन के खिलाफ हुए पहले अनशन पर बैठे स्वामी गोकुलानंद की 2003 में नैनीताल में खनन माफिया ने हत्या करवा दी।

मातृ सदन के प्रमुख स्वामी शिवानंद जो खुद भी अवैध खनन के खिलाफ अनशन पर बैठ चुके हैं, ने तय किया है कि जब तक सरकार प्रोफेसर जीडी अग्रवाल की गंगा को अविरल व निर्मल बहने देने की मांग नहीं मान लेती, तब तक मातृ सदन का कोई न कोई साधु आमरण अनशन पर बैठेगा, जबकि मनमोहन सिंह सरकार ने प्रोफेसर जी.डी. अग्रवाल द्वारा पांच बार किए गए अनशनों में उनकी कुछ बातें मान ली थीं, वर्तमान सरकार ने तो पूरी तरह से साधुओं द्वारा किए जा रहे अनशन को नजरअंदाज करने का निर्णय लिया है।

यह दुखद है कि ज्यादातर वे लोग जिन्होंने अपना जीवन दांव पर लगाया, अपने लिए जनसमर्थन नहीं जुटा पाए। इसी वजह से अनशन के दौरान ही उनकी जान चली गई। हालांकि उन्होंने सामाजिक सरोकार वाले मुद्दे उठाए, लेकिन उनके पक्ष में बहुत कम लोग आए। महात्मा गांधी व अन्ना हजारे को छोड़ जिन्हें जनता का साथ मिला व जिनके अनशन का लोगों पर कुछ असर भी पड़ा ज्यादातर अनशन करने वाले लोगों को अत्यंत कमजोर समर्थन ही मिल पाया, बल्कि समाज ने उनके प्रति क्रूरता की हद तक संवेदनहीनता दर्शायी।

लेकिन इन अनशनों ने यह साबित किया कि जबकि चारों तरफ अंधेरा हो, लोग और संगठन अपने क्षुद्र स्वार्थों के लिए समझौते किए हुए हों, भ्रष्टाचार में डूबे हुए हों, ज्यादातर लोग या तो सत्ता के सामने नतमस्तक हों अथवा उससे डरते हों, तो ऐसे भी लोग होते हैं जो सामने आते हैं, किसी मुद्दे पर खुलकर भूमिका लेते हैं और उत्पीड़क सत्ता का डटकर मुकाबला करते हैं। ये समाज के लिए उम्मीद की किरण बनते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत। ये अन्याय के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक और सत्य, निष्ठा, सादगी व मानव हित में शाश्वत सिद्धांतों के वाहक बनते हैं।

जिन लोगों ने अपनी जान की बाजी लगाई वे समाज के सबसे बुद्धिमान, प्रतिबद्ध व मानवीय लोगों में से थे। उनका असमय जाना समाज का ही नुकसान था, लेकिन सबसे दुर्भाग्यपूर्ण यह था कि जबकि सरकार से तो कोई रहम की उम्मीद किसी को नहीं थी, व्यापक समाज ने भी इनकी जान बचाने की कोई ईमानदार कोशिश नहीं की। इसके लिए हम सब दोषी माने जाएंगे इसके बावजूद कि जिन महान आत्माओं ने अपनी जान दी उन्हें खुद अपनी जान जाने की कोई परवाह नहीं थी।

समाज उन्हें हमेशा उनके आदर्शों के लिए याद करेगा। ये शहीद आने वाली पीढ़ियों के आदर्शवादियों को प्रेरणा देते रहेंगे। उनकी संख्या शायद कभी इतनी नहीं होगी कि वे समाज को बेहतर बदलाव की ओर ले जा सकें, लेकिन वे हमारे जैसे कमतर मनुष्यों को यह याद दिलाते रहेंगे कि जीने के लिए कुछ ऊंचे आदर्श भी होते हैं। हमें बड़े मानवीय समाज के निर्माण के उद्देश्य को भूलकर छोटी-छोटी चीजों में उलझकर नहीं रह जाना चाहिए, समाज विरोधी काम तो बिल्कुल ही नहीं करना चाहिए। यदि हम समाज के लिए कुछ अच्छा नहीं कर सकते तो उसको नुकसान भी नहीं पहुंचाना चाहिए। शहीद होने वाली महान आत्माओं से हम कम से कम इतना तो सीख ही सकते हैं।

हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम ने जुनूनी युवाओं के एक ऐसे समूह को देखा है जो अपना जीवन न्योछावर करने को तैयार था। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्लाह खान, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, शिवराम राजगुरु, सुखदेव थापर, जतीन्द्र नाथ दास ऐसे क्रांतिकारी थे, जिन्होंने शहादत दी के नाम से देश का हर घर वाकिफ है। इनमें से अधिकांश को फांसी की सजा हुई।

चंद्रशेखर आजाद ने गिरफ्तारी से बचने के लिए खुद को गोली मार ली और जतीन्द्र नाथ दास लाहौर जेल में राजनीतिक कैदियों के लिए बेहतर सुविधाओं की मांग को लेकर 63 दिनों की भूख हड़ताल के बाद शहीद हुए, जहां भगत सिंह भी उनके साथ उपवास में शामिल हुए थे।

स्वतंत्रता सेनानी पोट्टी श्रीरामुलू तेलुगु भाषा बोलने वालों के लिए अलग आन्ध्र राज्य की मांग को लेकर आजाद भारत में 58 दिनों के अनशन के बाद चेन्नई में, 1952 में, शहीद हो गए। हालांकि उनकी मांग को व्यापक जन समर्थन प्राप्त था, जिस वजह से जवाहरलाल नेहरू सरकार को उनके मरने के बाद उनकी बात माननी पड़ी, लेकिन पोट्टी श्रीरामुलू का अनशन करने का निर्णय व्यक्तिगत था।

जैन समुदाय की 13 वर्षीय अराधना समधरिया धार्मिक आस्था के कारण अपने माता-पिता की मर्जी से साध्वी बनने के विकल्प में 68 दिनों तक अनशन करने के बाद शहीद हो गई। उसके अनशन का कोई सामाजिक मकसद नहीं था, अत: यह व्यक्तिगत निर्णय से व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए किया गया अनशन था।

मणिपुर में इरोम शर्मिला ने फौलादी इरादों का परिचय देते हुए 16 लम्बे वर्षों तक सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम को हटाने की मांग को लेकर अनशन किया। अनशन पर जाने व उसे वापस लेने का उनका निर्णय व्यक्तिगत था। सौभाग्य से इतने लम्बे अनशन के बाद भी उनकी जान सुरक्षित रही।

भारत में तीन लाख से ऊपर किसानों ने निजीकरण, उदारीकरण व वैश्वीकरण की आर्थिक नीतियों के लागू होने के बाद लिए हुए ऋण का भुगतान न कर पाने की स्थिति में आत्महत्या कर ली। हालांकि संख्या की दृष्टि से बलिदान देने वाले समूहों में यह सबसे बड़ा समूह है, किंतु आत्महत्या की वजह व्यक्तिगत थी व यह कोई संगठित कार्यवाही नहीं थी। ये आत्महत्याएं स्वतंत्र रूप से की गई थीं।

नक्सलवादियों व आतंकवादियों में अपने उद्देश्य के लिए जबरदस्त प्रतिबद्धता होती है और उसके लिए जान देने की भी उतनी ही गहरी तैयारी होती है, किंतु हिंसा का मार्ग चुनने के कारण समाज में उनकी स्वीकार्यता नहीं है।

FASHION.IN

Available all types of ladies cotton kurties, Fancy Kurties, Jegin, legin, Fancy Top, T-Shirts, Trousers and imported material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490